II. शिक्षा के मानवीय जीवन में कार्य (Functions of Education in Human Life)

शिक्षा का मानवीय जीवन में महत्वपूर्ण योगदान है। जब बालक पैदा होता है तो वह असहाय बालक होता है। यदि उसकी देखभाल ठीक ढंग से न की जाए तो उसका विकास रुक जाएगा या वह नष्ट हो जाएगा। मानव जीवन में शिक्षा के निम्नलिखित कार्य हैं—

1. वैयक्तिकता का विकास (Development of Individuality)—व्यक्तिगत स्वतन्त्रता जनतन्त्र का आधार है और इसके अभाव में लोकतंत्रीय जीवन प्रणाली तथा शासन प्रणाली सम्भव नहीं है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है और उसमें यह योग्यता है कि अपनी सामर्थ्य के अनुसार वह सामाजिक प्रगति में योगदान कर सके। शिक्षा के कार्य में व्यक्ति की वैयक्तिकता का ध्यान रखना आवश्यक है। यह व्यक्ति को आत्मानुभूति करने में सहायता प्रदान करती है।

2. चरित्र का विकास (Development of Character)—शिक्षा का प्रमुख कार्य विद्यार्थी के चरित्र का विकास करना है। विद्यार्थी के चरित्र का निर्माण कार्य शिक्षक पर निर्भर करता है। एक अच्छे चरित्र वाला व्यक्ति ही संकुचित दृष्टिकोण, व्यक्तिगत लाभ, क्रोध, भय तथा धन-लोलुपता से ऊपर उठ सकता है। बालक कुछ जन्मजात शक्तियों व प्रवृत्तियों के साथ पैदा होता है। मूल प्रवृत्तियों के मार्गान्तीकरण एवं शोधन द्वारा व्यक्ति दूसरों की सेवा में लगता है, सहिष्णु बनता है और उसमें भ्रातृत्व का विकास होता है। शिक्षा का कार्य इन चारित्रिक गुणों का विकास करना है।

3. व्यावसायिक कुशलता (Vocational Efficiency)—शिक्षा का एक महत्वपूर्ण कार्य व्यक्ति को अपने जीवन में किसी व्यवसाय के लिए तैयार करना है जिससे वह परिवार का कमाऊ सदस्य बनने के साथ-साथ आत्म-विश्वासी, आत्म-निर्भर, प्रसन्न तथा समाज का सन्तुष्ट व्यक्ति बन सके। **स्वामी विवेकानन्द** (Swami Vivekanand) ने ठीक ही कहा है, "केवल पुस्तकें पढ़ने से काम नहीं चल सकता। हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिससे प्रत्येक अपने पाँव पर खड़ा हो सके।" ("Mere book learning won't do. We want that education by which one can stand on his own feet.") गाँधीजी और

Scanned with CamScanner

राधाकृष्णन् जैसे शिक्षाशास्त्रियों ने भी यह सुझाव दिया था कि शिक्षा द्वारा विद्यार्थी की अपनी आजीविका कमाने में सहायता की जानी चाहिए।

4. आवश्यकताओं की पूर्ति (Satisfaction of Needs)—प्रत्येक व्यक्ति की विभिन्न आवश्यकताएँ होती हैं जैसे—जैविक, सामाजिक, नैतिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, सौन्दर्यात्मक तथा आध्यात्मिक। शिक्षा का कार्य इन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना है क्योंकि इसी के परिणामस्वरूप बालक का सर्वांगीण विकास सम्भव हो सकेगा।

5. मनुष्य को सभ्य बनाना (Making the Man Civilized)—बालक जब इस धरती पर आता है तो वह पशुओं की भाँति असभ्य होता है। शिक्षा द्वारा उसकी भावनाओं को नियन्त्रित किया जाता है, प्रवृत्तियों को शुद्ध किया जाता है, रुचियों को सुधारा जाता है, आचरण को सुन्दर बनाया जाता है तथा ज्ञान में वृद्धि करके उसे सभ्य बनाया जाता है। सभ्य बनकर ही वह समाज के विकास में अपना योगदान देने के योग्य बनता है।

6. आत्म-बोध (Self-realization)—डॉ. राधाकृष्णन् शिक्षा के माध्यम से मानव को ईश्वर के समीप ले जाना चाहते हैं। उनका यह मानना है कि शिक्षा का कार्य मानव को इस लोक तथा अदृश्य लोक के दर्शन कराना है। ज्ञान एवं विद्वता शिक्षा के साध्य होने के साथ-साथ उच्चतर जीवन तथा दृष्टिकोण की प्राप्ति का साधन भी है। जिस प्रकार पदार्थ से जीवन, जीवन से बुद्धि और बुद्धि से मूल्यों की चेतना का विकास हुआ, उसी प्रकार मूल्यों की चेतना से ईश्वरीय अनुभूति का विकास हुआ। शिक्षा मानव को स्वयं को जानने में सहायता करती है।

7. अनुभवों का निरन्तर पुनर्गठन तथा पुनःनिर्माण (Continuous Reorganization and Reconstruction of Experiences)—**जॉन डीवी** (John Dewey) के शब्दों में, "शिक्षा अनुभवों के निरन्तर पुनःनिर्माण से जीने की प्रक्रिया है। यह व्यक्ति में उन सभी क्षमताओं का विकास है जो उसे अपने वातावरण को नियन्त्रित करने तथा अपनी सम्भावनाओं को पूरा करने के योग्य बना देगी।" ("Education is the process of living through continuous reconstruction of experiences. It is the development of all those capacities in the individual which will enable him to control his environment and fulfil his possibilities.") प्रत्येक बालक अपने पूर्वजों से कुछ न कुछ सीखता है तथा उन अनुभवों में परिवर्तन करता है, कुछ अपने अनुभव जोड़ता है तथा इन्हें आने वाले वंशज के लिए छोड़ देता है। यदि बालक अपने पूर्वजों के अनुभवों के बिना नए सिरे से आरम्भ करेगा तो समाज का विकास रुक जाएगा। अनुभवों का पुनर्गठन तथा पुनःनिर्माण ही व्यक्ति को जीवन की समस्याओं का सामना करने तथा सफलता के साथ जीवन में समायोजन करने में सहायता करता है।

8. शारीरिक विकास (Physical Development)—मनुष्य का विकास तीन तत्वों से युक्त होता है—शारीरिक, मानसिक व संवेगात्मक। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। इस प्रकार शिक्षा का कार्य केवल मानसिक विकास करना ही नहीं है अपितु शारीरिक विकास करना भी है। शारीरिक दुर्गुण या कमियाँ शिक्षा में बाधक होती हैं। शरीर और बुद्धि का परस्पर सम्बन्ध होता है, एक का विकास दूसरे के विकास में सहायक होता है इसलिए ग्रीक शिक्षा में शरीर की पुष्टि के लिए शारीरिक कसरत आदि का प्रबन्ध किया जाता

Scanned with CamScanner

है। आज स्कूलों में शरीर को स्वस्थ रखने के लिए लगभग सभी उपाय किए जाते हैं जैसे प्राथमिक स्तर पर विद्यालयों में मध्याह्न भोजन की व्यवस्था, पाठ्यक्रम में शारीरिक शिक्षा को स्थान, विद्यालय में योग की व्यवस्था आदि।

9. वातावरण का सुधार (Modification of Environment)—शिक्षा का कार्य मनुष्य को वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करने में सहायता प्रदान करना ही नहीं है अपितु उसे वातावरण में सुधार करने के योग्य बनाना भी है। प्रत्येक व्यक्ति पर उसके वंशानुक्रम के साथ-साथ वातावरण का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। यदि वह वातावरण के साथ केवल सामंजस्य स्थापित करता है तो उसे भगवान द्वारा जो मानसिक शक्ति प्रदान की गई है वह उसका प्रयोग नहीं कर रहा। इसलिए शिक्षा उसे यह सिखाती है कि वातावरण को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार कैसे परिवर्तित किया जाए। शिक्षा व्यक्ति को अपने वातावरण पर नियन्त्रण रखने के योग्य बनाती है।

10. जीवन के लिए तैयारी (Preparation for Life)—शिक्षा का एक प्रमुख कार्य व्यक्ति को जीवन के लिए तैयार करना है। मनुष्य को निरन्तर अपने जीवन में विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है और शिक्षा उसे उन समस्याओं को हल करने में सहायता करती है।

11. मूल्यों का विकास (Development of Values)—भारत में शिक्षा में शारीरिक, बौद्धिक, संवेगात्मक, सामाजिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों पर बल दिया जाता है। शिक्षा की परम्परागत विचारधारा यही थी—सामाजिक तथा नैतिक जागरूकता के रूप में शिक्षा की उपयोगिता को देखना, जीवन को सुन्दरता प्रदान करना और एक अच्छे सामाजिक तथा नैतिक जीवन के लिए आचार संहिता प्रदान करना। शिक्षा का कार्य हममें उचित और अनुचित, गलत व सही, अच्छाई व बुराई में सकारात्मक विभेदीकरण की योग्यता का विकास करना है। शिक्षा हमें मूल्यों में एकीकरण, शरीर तथा मन में एकीकरण, संवेगों तथा विचारों, व्यक्ति तथा समाज, समाज तथा विश्व के एकीकरण का ज्ञान प्रदान करती है।

12. दिशा प्रदान करना (Provide Direction)—शिक्षा का महत्वपूर्ण कार्य विद्यार्थी को विभिन्न क्षेत्रों में दिशा प्रदान करना है। दिशा-निर्देश नवयुवकों के समय तथा ऊर्जा की बचत करता है और वे शीघ्रता से अपने लक्ष्यों की प्राप्ति कर लेते हैं। दिशा-निर्देश का अभिप्राय यह भी है कि बालक अपने से बड़ों के अनुभवों से कुछ न कुछ सीखता है। इस दिशा-निर्देश को वैदिक प्रार्थना में बहुत अच्छे ढंग से व्यक्त किया गया है, "मुझे असत्य से सत्य, अन्धेरे से उजाले, नश्वरता से अनश्वरता की ओर ले चलो।" ("Lead me from untruth to truth, from darkness to light, and from mortality to immortality.") इस प्रकार बालक की योग्यताओं, क्षमताओं, रुचियों, अभिवृत्तियों आदि को शिक्षा द्वारा सही दिशा-निर्देश प्रदान किया जाता है।

अत: शिक्षा का कार्य समाज में प्रत्येक व्यक्ति की सभी सम्भावनाओं का इस प्रकार विकास करना है कि वे वांछित लक्ष्य की ओर अग्रसर होकर उसे प्राप्त कर सकें। वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए उस पर नियन्त्रण रख सकें तथा उसमें परिवर्तन कर सकें, अनुभवों का पुनर्गठन कर सकें, तथा समाज के उत्तरदायी नागरिक बन सकें।

Scanned with CamScanner